ऑनलाइन पाठ्य सामग्री

वर्ग - स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)

पत्र - प्रथम

सत्र - ~~2020-23~~ 2020-23

विषय (शीर्षक) - हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में शुक्ल जी का योगदान।

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान :-

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का आगमन नवजागरण की पृष्ठभूमि में हुई थी। इसका असर कहीं-न-कहीं उनकी इतिहास-दृष्टि पर भी देखा जा सकता है। एक ओर जहाँ शुक्ल जी के इतिहास दृष्टि में हिन्दी साहित्य की लोकोन्मुखी चेतना मौजूद है, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी विधेयवाद का प्रभाव भी मौजूद है। आचार्य शुक्ल मुख्यत: आलोचक थे, लेकिन उन्हें आलोचक धर्म के निर्वाह के लिए हिन्दी साहित्य के व्यवस्थित इतिहास की जरूरत थी जो अनुपलब्ध थी। उस समय जो भी इतिहास के नाम पर उपलब्ध था, उसमें इतिहास-दृष्टि का अभाव था। आचार्य शुक्ल ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुए हिन्दी साहित्य का ऐसा इतिहास लिखा जिसमें न केवल काल-विभाजन का व्यवस्थित ढाँचा और साहित्य के परिवर्तनशील स्वरूप की समझ मौजूद थी, वरन इन्होंने इसके जरिए हिन्दी साहित्य के इतिहास को साम्राज्यवादी पूर्वाग्रहों एवं रीतिवादी मानसिकता से मुक्ति दिलाते हुए साहित्य और

समाज के अंतर्संबंधों की पड़ताल की।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास में साहित्य और समाज के बीच के अंतर्संबंधों को परत-दर-परत खोलकर यह दिखला दिया कि सिर्फ साहित्य ही समाज को परिवर्तित नहीं करता है बल्कि समाज भी साहित्य को परिवर्तित करता है। यही कारण है कि उनका इतिहास अपने पूर्व के इतिहासों की भाँति मात्र कवि-कीर्तन बनने से बच गया। शुक्ल जी ने बड़े आत्मीयता के सहारे भारतीय साहित्य में अतीत और वर्तमान के बीच नैरंतर्य की खोज की। इसके लिए हिन्दी साहित्य के इतिहास लिखने के पूर्व भारतीय समाज, भारतीय संस्कृति, भारतीय दर्शन, और अपने युगीन संदर्भों के साथ-साथ हिन्दी भाषा के इतिहास का व्यापक अध्ययन किया। इसीलिए उनके इतिहास में अतीत के साथ संवाद के साथ-साथ वर्तमान से गहरे विवाद को भी अभिव्यक्ति मिली।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास का महत्व इस बात में है कि उनके इतिहास की संरचना काल-विभाजन और नामकरण की व्यवस्था तथा विभिन्न कवियों एवं लेखकों के संदर्भ में उनका मूल्यांकन किंचित संशोधनों के बावजूद बहुत हद तक अपरिवर्तित है। परिणामतः उनकी बहुत-सी स्थापनाएँ आज साहित्य के पाठकों के साहित्येतिहास-बोध का अंग बन चुकी हैं। यही कारण है कि शुक्ल जी के बाद भी इति हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' की केन्द्रीयता बनी हुई है। आज भी यह ग्रंथ

अपने निश्चित सीमाओं और अधूरेपन के बावजूद इतिहास लेखन में आधार-स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

शुक्ल जी के इतिहास के समानांतर उस स्तर का कोई दूसरा इतिहास नहीं लिखा जा सका। आचार्य शुक्ल का इतिहास महज हिन्दी साहित्य का इतिहास ही नहीं है, वह हिन्दी भाषा का इतिहास भी है। इसमें न केवल काव्य-भाषा और गद्य-भाषा के रूप में हिन्दी के विकास की विस्तृत प्रक्रिया का वर्णन है, बल्कि हिन्दी भाषा के जातीय स्वरूप की पहचान भी विद्यमान है। पहली बार आचार्य शुक्ल ने आदिकालीन, एवं भक्तिकालीन साहित्य के विवेचन के क्रम में अवहट्ट, प्रारंभिक हिन्दी, ब्रज, अवधी, मैथिली और राजस्थानी के सामासिक स्वरूप की पहचान की जिसे आगे चलकर रामविलास शर्मा ने हिन्दी भाषी-जातीयता और हिन्दी की जातीय परंपरा के टकसाली मुहावरे में ढाला।

आशय यह कि शुक्ल जी का इतिहास हिन्दी-भाषा ही नहीं वरन् हिन्दी साहित्य और समाज के अंतः संबंधों को उद्घाटित करते हुए एक ओर साहित्यिक परिवर्तन की आंतरिक प्रक्रिया को ध्यान में रखकर, दूसरी ओर सामाजिक संरचना के साथ-साथ राजनीतिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में भी उसकी व्याख्या की। इसीलिए आचार्य शुक्ल का इतिहास हमारे लिए आज भी प्रासंगिक है।

डॉ० मेनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
ललित नारायण मिथिला विवि, दरभंगा
(P. जी. एम. एम कॉलेज, बरौनी।)